Factors of social change (India)

सामाजिक परिवर्तन के कारक

परिवर्तन के कारक जो भारतीय समाज को परिवर्तित कर रहे हैं, दो भागों मे रखे जाते हैं—

(1) बाह्य कारक—इस पर मनुष्य का नियन्त्रण पूरी तरह से नहीं हो सका है। केवल आंशिक संशोधन इसमें सम्भव हो पाता है, जैसे प्राकृतिक अथवा जैविक कारक।

(2) आन्तरिक कारक—ये मानव नियन्त्रण में हैं फिर भी उनका बाध्यता-मूलक प्रभाव सामाजिक सम्बन्धों पर पड़ता है, जैसे औद्योगिकीय एवं सांस्कृतिक कारक।

अब हम संक्षेप मे इन कारकों का उल्लेख करेंगे तथा यह दर्शाने का प्रयत्न करेंगे कि वे किस प्रकार सामाजिक सम्बन्धों को प्रभावित कर रहे हैं।

(1) भौतिक या प्राकृतिक कारक—जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता जा रहा है वैसे-वैसे भौतिक तथा प्राकृतिक कारकों पर मानव-नियन्त्रण की आशा बढ़ती जा रही है। मनुष्य प्राकृतिक दशाओं को नियन्त्रित करने मे कुछ सफल भी हुआ है, जैसे नदियों पर पुलों का निर्माण, पहाड़ों के बीच रास्तो का बनाना, पथरीली तथा रेगिस्तानी जगहों को कृषि-योग्य बनाना, जंगलो को काट कर उसे कृषि-योग्य बनाना आदि। फिर भी प्राकृतिक कारकों का बाध्यतामूलक प्रभाव मानव जीवन और उसके अन्तः सम्बन्धो पर पड़ता चला आ रहा है। भौतिक पर्यावरण का वह भाग जो मानव-नियन्त्रण मे नही है उसे हम भौगोलिक कारक कहते हैं।

भौगोलिक कारक से तात्पर्य उन प्राकृतिक दशाओं से है जैसे—जलवायु, भूमि का वितरण, मौसम परिवर्तन, बाढ, भूकम्प आदि जिसका मानव सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ता है जैसे ऋतुओं के बदलने का प्रभाव हमारे सामाजिक सम्बन्धों पर पड़ता है। गर्मियों में शारीरिक अपराध, हत्या, लूटपाट, बलात्कार आदि की दर बढ जाती है—शरद काल मे आर्थिक अपराध अधिक होते हैं; उसी प्रकार जिस स्थान का तापक्रम अधिक घटता-बढ़ता नही वहाँ लोगो की कार्यक्षमता अधिक होती है। कार्यक्षमता अधिक होने के कारण उत्पादन में वृद्धि होती है और इस प्रकार आर्थिक समृद्धता में वृद्धि होती है। जहाँ जमीन उपजाऊ नही है वहाँ लोग चोरी, डकैती तथा इस प्रकार के अपराध अधिक करते है। हंटिंग्टन का मत है

कि जलवायु में परिवर्तन से सभ्यता और संस्कृति में परिवर्तन होता है। हक्सले भी जलवायु तथा भूमि की बनावट का सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्ध जोड़ता है। बाढ तथा भूकम्प आ जाने से सामाजिक सम्बन्ध छिन्न-भिन्न हो जाता है। सूखे के कारण भी समाज आर्थिक दृष्टिकोण से कमजोर हो जाता है जिसके कारण सामाजिक सम्बन्ध परिवर्तित होते हैं। बाढ़ से प्रत्येक वर्ष लाखों परिवार बेघरबार हो जाते है, असख्य लोगो की जान जाती हैं और इस प्रकार प्रचलित सामाजिक सम्बन्धो में परिवर्तन होता है। यही हालत सूखे की स्थिति में भी है। भौगोलिक कारक रहन-सहन, आचार-विचार, वेश-भूषा को प्रभावित करते हैं जिनका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव सामाजिक सम्बन्धों पर पड़ता है। प्रत्येक सभ्यता अपने पर्यावरण के साधनों का शोषण कर लेती है। यदि भौगोलिक दशाएँ मानव जीवन के अनुकूल हैं तो नि.सन्देह समाज विकास करेगा। इसके विपरीत यदि भौगोलिक दशाएँ क्रूर हैं तो मानव जीवन सुखी नही रह सकता। भारतवर्ष को सोने की चिड़िया इसीलिए कहा जाता था क्योंकि यहाँ की प्राकृतिक दशाएँ अधिक अंशों मे मानव जीवन के अनुरूप थी। प्राकृतिक दशाएँ यद्यपि किन्ही अशों मे अब मानव नियन्त्रण में हैं फिर भी सामाजिक संरचना को वे प्रभावित करती हैं।

(2) जैविक कारक (जनसंख्या में परिवर्तन)—भारतीय समाज को प्रभावित कर परिवर्तित करने का श्रेय जनसंख्या में परिवर्तन को है। सामाजिक सम्बन्ध मनुष्यों पर आश्रित हैं अत: उनकी संख्या मे वृद्धि अथवा कमी के कारण सामाजिक सम्बन्ध भी प्रभावित होते हैं जिनको हम सामाजिक परिवर्तन से सम्बोधित करते है। जनसंख्या का घनत्व, वितरण, शारीरिक तथा मानसिक योग्यता का सामाजिक परिवर्तन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। मनुष्य की जैविक योग्यताओं तथा गुणों मे भी निरन्तर परिवर्तन होता रहता है जिससे सामाजिक सम्बन्ध परिवर्तित होते है। एक ही परिवार में विभिन्न आचार-विचार के लोग मिलते हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव सामाजिक परिवर्तन पर पड़ता है क्योंकि विचारों, भावनाओं तथा मनोवृत्तियों का परिवर्तन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। यदि किसी समाज की जनसख्या एकाएक बढ जाती है तो उसके परिणामस्वरूप विभिन्न सामाजिक समस्याएँ जैसे भोजन और रहन-सहन की समस्या, शिक्षा, दवा-दारू आदि की समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं और उनका सामाजिक सम्बन्धों पर प्रभाव पड़ता है। भारतवर्ष मे 1951 से नियोजन के कार्यक्रम सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए चल रहे हैं फिर भी आशातीत सफलता नही मिल पा रही है, इसका प्रमुख कारण जनसंख्या मे वृद्धि है। लोगों की आवश्यकताएँ पूरी नही हो पा रही है यही कारण है कि लोगो मे असन्तोष व्याप्त है, जिससे प्रेरित होकर आये दिन अवांछनीय घटनाएँ घटित हो रही है। जनसख्या की अधिकता के कारण यहाँ लोगों को उचित मात्रा मे पौष्टिक आहार नही मिल पा रहा है जिसके कारण शारीरिक विकास ठीक प्रकार से नही हो रहा है। यह स्थिति यहाँ के लोगो की कार्यक्षमता को कम कर रही है जिसके कारण कुल उत्पादन कम हो रहा है, प्रतिव्यक्ति आय नहीं बढ़ रही है और समाज पिछड़ा हुआ तथा गरीब राष्ट्र कहला रहा है। कभी-कभी जनसंख्या मे एकाएक कमी के कारण भी सामाजिक सम्बन्ध परिवर्तित होते है जैसे महामारी, अकाल अथवा युद्ध के दिनों में देखा जाता है। भारतवर्ष में जनसख्या वृद्धि एक

समस्या के रूप में इसलिए है क्योंकि 'जनसंख्या की आन्तरिक रचना' का बंटवारा उचित नहीं है। जैसे उत्पादक आयु 18 वर्ष से 52 वर्ष मानी जाती है; यहाँ इस आयु-समूह के केवल 40 प्रतिशत लोग हैं जबकि 60 प्रतिशत ऐसे लोग हैं जो या तो बच्चे हैं अथवा बूढ़े। आर्थिक उत्पादन कार्यों में अब भी पुरुषो की महत्ता स्त्रियों से अधिक है अतः कुछ राज्य जहाँ पुरुषों की संख्या स्त्रियों से बहुत कम है वे आर्थिक दृष्टिकोण से पिछड़े हुए हैं। स्त्रियो की संख्या अधिक होने के कारण समाज में बहुपत्नी-विवाह की समस्या पायी जाती है। स्त्रियों की सख्या चूंकि अधिक है यही कारण है कि उनका सामाजिक महत्त्व भी कम है। भारतवर्ष में शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के कारण जाति और वर्ण के दायरे समाप्त हो रहे है। लोग अन्तर्जातीय और अन्तर्राष्ट्रीय विवाह कर रहे हैं। जीवन साथी का चुनाव अब अभिभावकों की इच्छा पर आश्रित न हो कर स्वयं उस व्यक्ति की इच्छा पर केन्द्रित है जो विवाह करने वाला है। यदि बेमेल अथवा अन्तर्जातीय विवाह हुआ तो मिश्रित रक्त-सम्बन्ध के कारण नये दम्पति द्वारा उत्पन्न सन्तानों के गुणों में परिवार के अन्य सदस्यो के गुणों की तुलना में अन्तर होगा। दोनों प्रकार के लोग दो मूल्यों को लेकर चलेंगे जिसके कारण सामाजिक परिवर्तन अवश्यम्भावी है। संयुक्त परिवार प्रणाली में परिवर्तन का यह एक प्रमुख कारण है। जन्म दर और मृत्यु दर को नियन्त्रित करने के लिए जिन प्रविधियो का प्रयोग किया जाता है उनके प्रति प्रतिक्रिया होती है क्योंकि मूल्यांकन परिवर्तनशील है। पहले यहाँ एक दम्पति के लिए आठ-दस बच्चे आवश्यक माने जाते थे लेकिन अब दो या तीन पर्याप्त हैं। 1971 की जनगणना रिपोर्ट से पता चलता है कि अब भारत की जनसंख्या 54 करोड़ 70 लाख हो गयी है। 1947 में भारत और पाकिस्तान की सम्मिलित आबादी 33 करोड़ थी। यहाँ की जनसंख्या-वृद्धि माल्थस के सिद्धान्त से मेल खाती है जिसमें कहा गया है कि यदि प्रतिबन्धों का प्रयोग नहीं किया जाता तो किसी भी समाज की जनसंख्या 25 वर्ष में दुगुनी हो जायेगी। 1961–71 के बीच जनसंख्या वृद्धि 24·8 प्रतिशत रही है जबकि 1951–61 के बीच यह वृद्धि 22·18 प्रतिशत थी। प्रतिबन्धों (परिवार नियोजन कार्यक्रम) के प्रयोग के बावजूद जनसंख्या की वृद्धि सामाजिक परिवर्तन के लिए जिम्मेदार है। जनसंख्या-वृद्धि मे अल्पसख्यकों का योगदान अधिक है। 1971 जनगणना रिपोर्ट के अनुसार हिन्दू जो कुल जनसंख्या के 82·72 प्रतिशत है, पिछले 10 वर्षों (1961–71) मे उनकी वृद्धि 23·69 प्रतिशत रही है जबकि मुस्लिम जो कुल आबादी के 11·21 प्रतिशत हैं, उनकी वृद्धि पिछले दस वर्षों मे 30·85 प्रतिशत रही है। इसी प्रकार ईसाई जो केवल 2 6 प्रतिशत हैं उनमें जनसंख्या-वृद्धि 32·6 प्रतिशत हुई है और लगभग इसी अनुपात में सिक्ख, बौद्ध तथा जैनियो में भी जनसंख्या-वृद्धि पायी गयी है। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि जनसंख्या-वृद्धि भारतीय सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है।

(3) **प्रौद्योगिकीय कारक**—जैसे-जैसे लोगों का झुकाव भौतिक समृद्धता की ओर होता जा रहा है वैसे-वैसे लोग प्रौद्योगिकीय आविष्कारों को अपना रहे हैं। भारतीय समाज पर प्रौद्योगिकीय प्रभाव अब उतना ही महत्त्वपूर्ण हो गया है जितना कि वह विकसित समाजों में है। प्रौद्योगिकी (मशीन, कल, पुर्जे) यद्यपि मानव-निर्मित हैं फिर भी उसका बाध्यतामूलक प्रभाव मानव सम्बन्धों पर पड़ता